REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक मूल्य

प्रा. मारूती दत्तात्रय नायकू
शरदचंद्र पवार महाविदयालय, लोणंद ,
ता. खंडाला, जिला–सातारा.

प्रास्ताविक :–

हिंदी कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंदजी ने अपने जीवन में 300 से अधिक कहानियाँ लिखी। इन कहानियों में सामाजिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक आदि कहानी के प्रकार हमें दिखाई देते हैं। प्रेमचंदजीने ज्यादातर सामाजिक कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में उन्होने समाज के दलित तथा पिछडी जातियों के कई पात्रों को लेकर उनकी यथार्थ परिस्थिति को पाठकों के सामने रखा है। साथ ही इन्ही जातियों की महिला पात्रों की पीडा तथा वेदना भी व्यक्त की है।

साहित्य और समाज का अनन्य साधारण धनिष्ठ संबध हैं। समाज को छोडकर साहित्य की कल्पना भी हम नहीं कर सकते। मानो समाज का प्रतिबिम्ब साहित्य में परिलक्षित होता हैं। इसलिए प्रेमचंद ने समाज के भिन्न वर्गो के पात्रों को लेकर उनको अजरामर बना दिया। समाज के इन पात्रों के लेकर प्रेमचंदजी ने अनेक सामाजिक कहानियाँ लिखी। अतः सामाजिक कहानियाँ लिखते समय सामाजिक मूल्यों का आना लाजमी है।

मूल्य का अर्थ :–

'मूल्य' शब्द अंग्रेजी के Value शब्द का पर्यायवाची हैं। value शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Valere से हुई है, जिसका अर्थ हैं – अच्छा, सुंदर। 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' इस कोष में ''जो जीवन को अस्तित्व और गति प्रदान करे वहीं मूल्य है।'' ऐसा अर्थ बताया है।

'मूल्य' की परिभाषाएँ और सामाजिक मूल्य :–

'मूल्य' की परिभाषाएँ विभिन्न पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने देने का प्रयास किया हैं।

1) अर्बन :– '' ऐसी कोई भी वस्तु मूल्य हो सकती हैं, जो जीवन को आगे बढाती हैं और सुरक्षित करती हैं।''

2) बोगार्डस :– '' सभी मानवीय संबंध और व्यवहार मूल्य ही हैं।''

3) सी. वी. गुड :– ''मूल्य वह चारित्रिक विशेषता हैं, जो मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सौंदर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।''

मूल्य की विभिन्न परिभाषाओं के आधारपर अनेक विद्वानों ने नैतिक मूल्य, पारिवारिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, राष्ट्रीय मूल्य,राजनीतिक मूल्य, दार्शनिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आदि मूल्यों में वर्गीकरण किया है। डॉ. हुकुमचंद राजपाल जी ने अपने 'आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य' इस पुस्तक में सामाजिक मूल्य का उल्लेख किया हैं।सामाजिक मूल्य में सामाजिक जीवन से संबंधित सामाजिक समानता, सामाजिक संतुलन, उपेक्षित, पीडित, शोषित, दलित, नारी एवं समाज के पिछडे वर्ग के प्रति सहानुभूति तथा आस्था, परस्पर सौहार्द, जाति प्रेम आदि मूल्य आते हैं।

अतः हमारे विचार से समाज के प्रति सकारात्मक और इश्ट विचार व्यक्त करके उसपर अमल करना ही सामाजिक मूल्य हैं। सामाजिक मूल्यों से संबधित प्रेमचंदजी ने अनेक कहानियॉ लिखी, परंतु उनमें से कुछ कहानियों के कथ्य के आधारपर सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण किया है।

प्रेमचंद की सामाजिक मूल्यप्रधान कहानियाँ :–

इस प्रकार की कहानियाँ में दलित, पिछडे वर्ग के लोग, किसान, मजदूर आदि पर होनेवाले अन्याय–अत्याचार, जिससे उत्पन्न उन तमाम वर्गों के प्रति सहानुभूति तथा महिला और मध्यवर्गीय लोगों की वेदना, पीडा, घूटन आदि को देखकर उनके प्रति सहानुभूति और सकारात्मक दृष्टिकोण सामाजिक मूल्य के अंतर्गत आता हैं। प्रेमचंदजी ने दलित और पिछडे वर्गोपर होनेवाले अन्याय–अत्याचार, किसान, मजदूर, महिला आदि की दशा तथा मध्यवर्ग की घूटन अपनी विभिन्न कहानियों में चित्रित की हैं। इससे हमें सामाजिक मूल्य की पहचान होती हैं। अतः सामाजिक मूल्यप्रधान कहानियाँ निम्नप्रकार से हैं।

1) ठाकुर का कुआँ– यह प्रेमचंदजी की लोकप्रिय कहानी हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हमारी जातिप्रथा पर ऊँच–नीच के झूठे खयालों पर गहरी चोट की हैं। सामाजिक विषमता किस हद तक पहुँची हैं इसका उदाहरण इस कहानी में मिलता हैं।

गंगी का पति जोखू बीमार हैं। जोखू दलित जाति का हैं। उनका कुआँ गाँव से बहुत दूर हैं। गंगी हर दिन शाम को वहाँ से पीने का पानी भर लाती थी। कल जबवह पानी लायी तो उसमें बू नहीं थी, परंतु आज उस पानी से भयंकर बदबू आ रही थी। शायद कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा। परंतु अब रात के नौ बज चुके थे और इतनी रात गये वह पानी कहाँ से ला सकती है? गाँव में दूसरे दो कुएँ हैं– एक ठाकुर का कुआँ और दूसरा साहँ का कुँआ। वे लोग अछूतों को अपने कुएँ से पानी नहीं भरने देते। गंगी जोखू को वह बदबूदार पानी नहीं पीने देती, क्योंकि उससे उसकी बीमारी बढ़ सकती हैं। अतः किसी प्रकार साहस जुटाकर गंगी लुकती– छिपती ठाकुर के कुएँ पर जाती हैं। डरते–डरते अपने देवताओं को याद करते हुए और कलेजे को मजबूत करते हुए गंगी घडे को कुएँ में डाल देती हैं। बहुत धीरे–धीरे उपर खींचकर घडा कुएँ के मुँह तक आ ही गया था कि अचानक ठाकुर साहब का दरवाजा खुलता हैं और गंगी के हाथ से रस्सी छूट जाती हैं। घडा पानी में गिरने से आवाज होती हैं। कौन हैं? पुकारते हुए ठाकुर कुएँ की तरफ आते हैं, तब गुंगी कुएँ के जगह से कुदकर भागती हैं और घर पहुँचती हैं। घर पहुँचने परवह देखती हैं कि जोखू लोटा मुँह से लगाये मैला–गंदा पानी पी रहा हैं।

प्रस्तुत कहानी छोटी हैं। परंतु इसमें दलितों पर हो रहे अन्याय की दास्तान बहुत लम्बी हैं। एक मानव दूसरे मानव के साथ जातियों के नियमों के आधार पर पानी पीने की भी आजादी नहीं दे सकता? अतः जातिप्रथा तथा सामाजिक विषमता माननेवालों के प्रति चीढ़ और सामाजिक विषमता के शिकार हुए दलितों के प्रति सहानुभूति इन सामाजिक मूल्यों का एहसास उक्त कहानी में दिखाया हैं।

2) दूध का दाम :– प्रेमचंदजी की यह कहानी महत्त्वपूर्ण एवं यथार्थवादी हैं। इस कहानी में उच्चवर्ग की कृतघ्नता तथा दुषित मानसिकता लेखक ने हमारे सामने प्रकट की हैं। पिछडे वर्गो के प्रति कृतज्ञता रखना यह 'सामाजिक मूल्य' इस कहानी से हमें मिलता हैं।

बाबू महेशनाथ गाँव के जमींदार हैं। उनको पुत्रियों पर पुत्ररत्न प्राप्त हुआ हैं। महेशनाथ की पत्नी की प्रसूती के बाद की सेवा सुश्रृता गाँव की भंगी जाति की मूँगी नामक महिला करती हैं। इतना ही नहीं मालकिन का दूध बच्चे के लिये न उतरने के कारण मूँगी अपना दूध मालकिन के बेटे सुरेश को पिलाती हैं। अतः मूँगी का अपना बेटा मंगल भूखा रहता था। ऊपर का दूध हजम न होने के कारण वह उल्टी कर देता हैं। परिणाम स्वरूप दिन–ब–दिन वह दुर्बल होता जाता हैं। एक साल के बाद प्लेग के कारण मूँगी के पति का देहांत होता हैं। मूँगी महेशनाथ के यहाँ काम करके अपने बेटे को पाल रहीं हैं। एक दिन हवेली का परनाला साफ करते हुए मूँगी को साँप डसता हैं, और वह मर जाती हैं। मंगल अनाथ होता हैं। मंगल को वही 'टामी' नाम का कुत्ता मिलता हैं। टामी भी मंगल की तरह सद्वर्गियों से उपेक्षित होने कारण समदुःखी हैं। मंगल और टामी का गुजारा जमींदार के घर की जुठन पर होता हैं।

एक दिन जमींदार का बेटा सुरेश खेल में जबरदस्ती से मंगल को घोडा बनवाता हैं और उसपर बैठता हैं। मंगल सुरेश का बोझ सह नहीं पाता अतः वह अपनी पीठ सिकुडता हैं और सुरेश गिर जाता हैं। अपनी शिकायत माँ से करता हैं। मालकिन मंगल को बुरी तरह अपमानित करके निकाल देती हैं। दिनभर मंगल और टामी इधर –उधर भूखे घूमते हैं, परंतु रात होने पर भूख बर्दाष्त नहीं होती और वे दोनों फिर जमींदार साहब के

घर लौटते हैं। रात के वक्त कहार जूठन फेंकने को जा रहा था कि उसकी नजर मंगल पर जाती हैं। वह झूठी पतलों को मंगल के हवाले करता हैं। इस तरह मंगल और टामी जूठन खाते हैं। मंगल की दृष्टि से जूठन मिलना ही दूध के दाम जैसा ही हैं।

अतः उच्च्वणियों की शोषण नीति और पिछडे वर्ग की मजबुरी का भयानक दृष्य उक्त कहानी में देखने मिलता हैं। सहदय पाठक के मन में मंगल के प्रति करूणा और सहानूभूति जागृत होना ही सामाजिक मूल्य हैं। उच्चवर्णिय लोग कितने भी कृतघ्न हो जाये लेकिन पिछडे वर्ग के हदय में मजबुरी के कारण उनके प्रति कृतज्ञता ही नजर आती हैं। यह पिछडे वर्ग के विशाल हदय का परिचय हैं।

3) सद्‌गति :– प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने अस्पृष्य लोगों पर होनेवाले अन्याय–अत्याचार का विदारक वर्णन किया हैं। साथ ही अस्पश्य जाति में रहनेवाले धार्मिक अंधविश्वास पर भी व्यंग्य किया हैं।

चमार जाति का दु'खी नामक चमार अपनी पत्नी झुरिया और बेटी के साथ रहता था। बेटी विवाह योग्य बनने के बाद वह बेटी का विवाह तय करता हैं। विवाह का शुभ मुहुर्त निकालने के लिये वह गाँव के ब्राम्हण पंडित घासीराम को अपने घर बुलाना चाहता हैं। इसलिये वह अपने घर में खाने–पीने और बैठने की व्यवस्था करके उनको बुलाने जाता हैं। पंडित घासीराम बडा दृष्ट और अस्पृष्यता माननेवाला व्यक्ति था। पहले वह आने के लिएतैयार नहीं था। लाख बिनंती करने के बाद वह शाम तक आने का वादा करता हैं और वह दुःखी चमार को अपने घर का काम करने के लिये कहता हैं। घर का द्वार साफ करना, बैठक का कमरा गोबर से लिपना, घर के सामने पडी लकडी को फोड़ना और खेत से भूसे की चार बोरियाँ लाने का काम बताता हैं। पं. घासीराम का आदेष भगवान का हुक्म मानकर दुःखी एक–एक काम करता हैं। दुःखी ने सुबह से कुछ खाया नहीं था। वह कडी दोपहरी में लकड़ी फोडने का काम करता रहा। उधर पंडितजी खाना खाकर डकार लेकर सो रहे थे। दुःखी लकड़ी फोडते–फोडते थक गया। लकडी में गाँठ होने के कारण लकडी टूटती नहीं थी। शाम हो गयी, पंडितजी सोकर उठे। दुःखी फिर उनसे अपने घर मुहुर्त निकलने के लिये चलने को कहता हैं, परंतु जब तक लकडी फोडने का काम पूरा नही होता तब तक पंडित आने से इंकार करते हैं। आखिर लकडी फोड़ते – फोडते गाँठवाली लकडी टूट जाती हैं, इसके साथ दुःखी भी थक कर गिर जाता है और वही मर जाता हैं। पंडित घासीराम चमार जाति के लोगों को लाष लेकर जाने के लिये कहते है परंतु चिखुरी गौंड नामक चमार पुलिस केस करने की माँग करता हैं। पंडित घासीराम उसकी बात को सुनकर दुःखी चमार की लाश को पैरो में रस्सी बाँधकर घसीटते हुए गाँव के बाहर फेंक देता हैं। लाश को गिध्द, कुत्ते और कौएँ नोच–नोचकर खाते हैं।

इसप्रकार उच्च वर्णियों द्वारा अस्पृष्य जाति पर होनेवाले अमानवीय व्यवहार से चीढ़ उत्पन्न होती हैं। यहीं 'चीढ' और दुःखी के प्रति सहानुभूति ये सामाजिक मूल्य हैं। सामाजिक विषमता तथा धार्मिक अंधश्रध्दा आदि का विरोध करना भी मूल्य की रक्षा करने जैसा हैं। चिखुरी गौंड नामक पात्र द्वारा दिखाया गया विद्रोह भी सामाजिक मूल्य के अंतर्गत आता हैं।

4) कफन :– प्रेमचंदजी की यह कहानी जितनी लोकप्रिय हैं, उतनी ही समीक्षा करनेवालों में विवादास्पद कहानी हैं। इस कहानी में निम्न जातियों की भयानक दषा का वर्णन होने के साथ–साथ उनपर कामचोरी का आरोप भी लगाया हैं। अतः निम्नजातियों में ही 'कामचोरी' का आरोप क्यों? इस विवादों के घेरे में यह कहानी अटकी हुई हैं। लेकिन जो भी हमें ऐसा लगता हैं कि निम्न वर्गियों को कामचोर बनानेवाले और कोई नहीं उच्च वर्गीय ही हैं।

घीसू और माधव बाप–बेटे चमार जाति के बडे की कामचोर व्यक्ति थें। एक दिन काम करना, तीन दिन तक आराम करना, चिलम पीना, किसी की लकडियाँ तोडकर बाजार में बेचना, दूसरों के खेत से मटर या आलू उखाडकर खाना आदि दोनों का नित्यक्रम था। ऐसी हालत में उन दोनों को बहुत–बार मार भी पड़ी थी। उनको कोई काम पर भी नहीं रखता था, ना उनको कोई उधार देता था।

एक दिन माधव की पत्नी बुधियाँ झोपडी में प्रसव पीडा से कराह रही थी। उसको मदद करने के बजाय घीसू और माधव दोनों झोपडी के बाहर भूने हुए आले खाने में मग्न थे। बुधिया की दर्दभरी आवाज सुनकर माधव उसके मरने की कामना करता हैं, क्योंकि उसकी प्रसूती के बाद सोंठ, गुड और तेल आदि का खर्चा करने में वह असमर्थ था। अत' मदद न मिलने के कारण बुधिया मर जाती हैं। घीसू और माधव रोते हुए उसके अंतिम

क्रिया कर्म के लिये गाँव के जमींदार के घर पैसे माँगने जाते हैं। जमींदार को इन दोनों के बारे में मालूमात होते हुए भी दोन रूपये निकालकर देते हैं। गाँव में अपनी बहु की मौत ढ़िंढोरा पिटने के बाद घीसू के हाथ में पाँच रूपये जमा होते हैं। अतः दस पाँच रूपये से कफन खरीदने के लिये वें दोनों बाजार जाते हैं। लेकिन कफन के बजाय वे षराब पीते हैं, मछलियाँ, पुडियाँ और कलेजियाँ आदि खाते हैं। नशे में वे दोनों बुधियाँ के मरने पर धन्यवाद देते हैं। बुधिया का अंतिम संस्कार गाँववाले करेंगे ऐसा उनको विष्वास था। घीसू और माधव नशें में झूमते हुए उच्चवर्ग की स्वार्थी वृत्ति पर व्यंग्य भी करते हैं।

अतः अक्सर देखा जाता हैं कि निम्न जातियों के घरों में मीठे पक्वान, सुख सुविधाओं, आदि का अभाव होता हैं। अर्थिक विपन्नता इसका प्रमुख कारण हैं। अतः निम्न जातियों को 'निम्न' का दर्जा देने का श्रेय उच्च वर्णियों का हैं। सामाजिक विषमता, निम्न जातियोंपर होने वाले अन्याय आदि के कारण निम्न जातियाँ दिशाहीन और कामचोर हो गई हैं। अतः इनको सही दिशा दिखाना और मदद करना ही सामाजिक मूल्य हैं।

5) घासवाली :– प्रेमचंदजी की यह काफी प्रसिध्द कहानी हैं। इस कहानी में उच्च जाति के लोग किस प्रकार निम्न जाति की स्त्रियों के साथ यौन – खिलवाड़ करते हैं यह बताया हैं। साथ–ही–साथ उसका विरोध करने की हिम्मत एक स्त्री में दिखाई हैं।

मुलिया नामक घास कॉटनेवाली स्त्री महावीर चमार की पत्नी हैं। वह अत्याधिक सुंदर होने के कारण गाँव के मनचले युवक उसकी एक चितवन को तरसते थे। परंतु मुलिया हमेशा अपनी आँखे नीचे झुकाकर अपने राह पर चलती थी। एक दिन वह ऐसे ही घास काटने जाती हैं, तब गाँव का युवा ठाकुर चैनसिंह उसका हाथ पकड़ लेता हैं और अपना बनाने की बात करता हैं। तब मुलिया बड़े साहस और क्रोध के साथ उसका मुकाबला करती हैं। चैनसिंह डरकर उसका हाथ छोडता हैं। संघर्ष टालने के लिये मुलियाअपने पति को यह घटना नहीं बताती। दूसरे दिन माफी माँगकर चैनसिंह मुलिया से बहस करता हैं, उस वक्त ऊँचे खानदानों का ज्वलंत सत्य मुलिया सामने रखती हैं। जिसे सुनकर चैनसिंह पानी–पानी हो जाता हैं। परंतु मुलिया के प्रति उसका आकर्षण कम नहीं होता। मुलिया का पति महावीर इक्का चलाता था। चैनसिंह उसके इक्के में हमेशा बैठता था, अतः महावीर को चैनसिंह के प्रति कृतज्ञता भाव था। एक दिन ऐसे ही चैनसिंह महावीर के इक्के बैठा था, तब वह मुलिया को रास्ते में कुछ लोगों से हँसकर घास का सौदा करते देखता हैं। यह बात चैनसिंह को अच्छी नहीं लगती। वह उसे खुद पा नहीं सकता था, लेकिन दूसरों को भी पाने नहीं देना चाहता था। अतः वह महावीर से बताता हैं कि मूलिया को घास बेचने के लिये शहर मत भेजा करों। जब यह बात मुलिया को मालूम होती हैं तो वह चैनसिंह की बोलती बंद करती हैं। चैनसिंह भी अपनी मर्यादा, इज्जत बचाने के लिये चूप बैठता हैं।

इसप्रकार गाँव के बडे जाति के लोग भले ही अपने आचरण और व्यवहार में परिवर्तन का ढोंग करते हैं, लेकिन मुलिया जैसी निम्न जाति की स्त्री अपने संस्कार, पतिव्रता, साहसी और बेधड़क स्वभाव से उनके ढोंग का पर्दा गिराती हैं। निम्नजाति या किसी भी सुंदर स्त्री के प्रति अपना दृष्टिकोन पवित्र, नेक और सकारात्मक होना यही सामाजिक मूल्य हैं।

6) मृतक भोज :– यह मुंशी प्रेमचंदजी की प्रसिध्द और सशक्त कहानी हैं। इस कहानी में लेखक ने समाज के बडी बिरादरी के पंच लोग किसप्रकार सामाजिक कुरीतियाँ और धार्मिक आडम्बरों को पनाह देते हैं, इसका विदारक चित्रण किया हैं।

शेठ रामनाथ उँची बिरादरी के धनी व्यक्ति थे। उनके घर में उनकी पत्नी सुशिला, आठ साल का मोहन और ग्यारह साल की रेवती नामक पुत्री थी। लम्बी बीमारी के कारण रामनाथ का निधन होता हैं। जो सम्पति उन्होंने कमाई थी, वह सब बीमारी में खर्च हो गयी थी। अतः घर में कुछ पैसे और जेवरात बाकी थे। गाँव के सरपंच सेठ धनीराम और कुबेरदास सुशिला पर दबाव डालते हैं कि गाँववालों तथा ब्राम्हण मंडली को मृतक भोज देना चाहिए। नही तो वह 'बिरादरी का अपमान होगा या मरनेवाले की आत्मा को षांति नहीं मिलेगी' आदि कारण बताते हैं। सुशिला के पास इतने पैसे नहीं थे कि मृतक भोज करवा सके। लेकिन डर की वजह से सुशिला तैयार होती हैं। घर के जेवरात भीमचंद और दुर्बलदास नामक धनी व्यक्ति खरीदते हैं। सुशिला का मकान 30 हजार में कुबेरदास खरीदते हैं, लेकिन पैसे देते समय वह अपने 25 हजार काटकर 5 हजार ही देते हैं। सुशिला का भाई संतलाल के विरोध के बावजूद 10 हजार रूपये में मृतक भोज होता हैं। मृतकभोज होने के

बाद सुशिला को रहने के लिये घर नहीं था, अतः वह सेठ झाबरमल के यहाँ अपने बच्चों को लेकर किराये पर रहती हैं। किराये के पैसे भी उसके पास नही थे। अतः झाबरमल उसके बदले में रेवती के साथ सगाई करने की बात करता हैं। सुशिला उसका विरोध करती हैं, तो वह उसे घर से बाहर निकलता हैं। सुशिला अब साग भाजी बेचनेवाली एक वृद्ध खटकिन के घर में रहती हैं। खटकिन अच्छी औरत थी। एक दिन मोहन बीमार पडता है। उसकी बीमारी की देखभाल सुशिला करती है।। अतः मोहन ठिक होता है और सुशिला बीमार पडके उसीमें उसका देहांत होता हैं। मोहन और रेवती बेसारा होते हैं। कुबेरदास जबरदस्ती से रेवती का विवाह झाबरमल से करना चाहता हैं लेकिन रेवती विरोध करती हैं ओर गंगानदी में अपनी जानदेती हैं। अंत में मोहन खटकिन की गोद में अकेला ही रोता रहता हैं।

इस प्रकार बडी बिरादरी के पंच लोग जिस प्रकार एक परिवार पर अन्याय– अत्याचार करते हैं, उसका विरोध करना तथा सामाजिक कुरीतियाँ और धार्मिक आडम्बरों का विरोध करना ही सामाजिक मूल्य हैं। समाज के धनी व्यक्ति किसप्रकार एक परिवार को लुटते हैं ऐसे धनी व्यक्तियों को उनको गुनाह का दंड देना ही सामाजिक न्याय हैं।

7) स्वामिनी :– प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने एक स्त्री की अविरत परिश्रम करने की प्रवृत्ति को उजागर किया हैं। अपने जीवन की विषमताओं, विवशताओं और विडम्बनाओं से लडकर एक नारी अपनी अस्मिता को बनाये रखती हैं।

शिवदास के बिरजू और मथुरा नामक दो बेटे हैं। बिरजू का विवाह रामप्यारी से और मथुरा का रामदुलारी इन बहनों के साथ होता हैं। थोडे ही दीनों में रामप्यारी विधवा होती हैं। अतः शिवदास जी घर की सारी जिम्मेदारी उसके हाथों सौंफ देते हैं। रामप्यारी अपना सुख–दुःख भूलकर एक मुखिया की तरह घर के लिये परिश्रम उठाती हैं। वह हर वक्त परिवार की चिंता करती हैं। परिवार के सुख में ही उसका सुख निहीत हैं। उसकी बहन रामदुलारी को जब बेटा होता हैं तो वह दिल खोलकर खर्च करती हैं। परंतु रामदुलारी और मथुरा हर वक्त रामप्यारी पर व्यंग करके उसका तिरस्कार ही करते हैं। कुछ दिन बाद षिवदास का भी निधन होता है । अब रामदूलारी तीन बच्चों की माता होती हैं । वह अपने पति के कान भरती हैं । मथूरा, दुलारी और उनके बच्चे एक दिन घर छोडके परदेष चले जाते हें । परदेश में अच्छी कमाई करके वह अपने बच्चों को लिखा -पढा जा सके यह उनका इरादा था । जाते समय रामप्यारी उन्हें बहुत रोकती है परंतु वे चले ही जाते हैं। अब घर में राम प्यारी अकेली रहती है। खेत -खलिहान की जिम्मेदारी सब अपने उपर लेती हैं । घर की मर्यादा को वह सँभलती हैं । घर का पुराना नौकर -जोखू आलसी और कामचोर था । रामप्यारी उसमें विश्वास पैदा करके जिम्मेदारी सौंपती हैं । जोखु भी जी -तोड के काम करता हैं ।

इसप्रकार प्रस्तुत कहानी में एक विधवा स्त्री की विवशता ,कठोर परिश्रम और मर्यादाओं का पालन करने के लिये जी -तोड संघर्ष करना जैसे सामाजिक मूल्य आये हैं । नारी को अबला कहने वाले इस कहानी को देखकर अचंबित जरूर होंगे । जो काम पुरूष कर सकता हैं,वह काम नारी भी कर सकती हैं । इसलिये इस कहानी की रामप्यारी स्वामिनी बनी हैं । स्वामिनी का कठोर परिश्रम प्रेरक मूल्य हैं ।

8) शुद्रा :- प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंदजी ने निम्न जातियों में होनेवाला ऊँच -नीच का भेदभाव दिखाया हैं । साथ -ही -साथ शंकालू मन जीवन का नाश करने के लिये दूसरों को बाध्य करता हैं यह भी दिखाया हैं ।

विधवा गंगा अपनी जवान बेटी गौरा के साथ एक झोपडी में रहती हैं । गौरा बाग से पत्तियॉ बटोर लाती हैं और गंगा शड झोकने का काम करती हैं । इन दोंनों का घर कैसे चलता हैं ? यह संदेश हमेशा गॉववालों के मन में रहता हैं । एक दिन कलकत्ता से आये हुए मंगरू नामक कहार का परिचय गंगा से होता हैं । मंगरू को गौरा पसंद आती हैं वह उसके साथ सगाई करता हैं और उसीके घर में रहता हैं ।मंगरू के बहनोई तथा बहन को ये रिष्ता मंजुर नही था । वह उसे अपमानित करते हैं । अतः एक दिन मंगरू गौरा के घर से अचानक निकल जाता हैं । गौरा शी समझ नहीं सकती कि मंगरू क्यों चला गया? वह उसकी राह देखती हैं । एक दिन एक बूढा ब्राम्हण गंगा के घर आता हैं ।वह झूठ ही कहता है कि मंगरू ने गौरा को बुलाया हैं । वह अपने साथ गौरा को लेकर कलकत्ता आता हैं । कलकत्ता से वह एक जहाज से गौरा को मिरिच टापू के लिये शेजता हैं । जहाज में एक विधवा ब्राम्हणी शी थी । अतः वह और गौरा समझ जाते हैं कि

उनके साथ कुछ अनैतिक होनेवाला हैं । जहाज से उतरते ही गौरा को मंगरू अंग्रेज के लिबास में दिखाई देता हैं । मंगरू वहॉ यात्रियों का नाम लिखने का काम करता था । मंगरू गौरा और उस विधवा ब्राम्हणी को छिपाकर अपने यहॉ लाता हैं परंतु नबी नामक व्यक्ती अंग्रेंज एजेंट को चुगली करता हैं । अंग्रेज मंगरू को दो औरतो में से एक को बंगले पर श्रेजने के लिये कहता हैं । मंगरू के सामने समस्या खडी होती हैं। वह किसी को नही श्रेजता । अतः अंग्रेज मंगरू को चाबुक से मारता है । गौरा को वेदना होती है,वह रोकने के लिये बीच में पडती हैं , और वह स्वयं उस अंग्रेज के साथ चलने के लिये तैयार होती हैं । मंगरू बेहोश होकर पडता हैं । उधर गौरा अंग्रेज का ह्रदय परिवर्तन करके अपने को उसके चंगुल से छुडवाती हैं । मंगरू अस्पताल में था ,उसको होश आया था , तब गौरा पहुॅचती हैं । मंगरू को लगता है कि गौरा कलुशित हो गई हैं । वह उसपर संदेह प्रकट करता हैं । गौरा को बहुत दुख होता हैं । वह पास वाली नदी में छलांग लगाती हैं । मंगरू को शी अपने आप पर पछतावा होता हैं । वह शी उसे बचाने के लिये नदी में कुद पडता हैं । मंगरू को तैरना आता था ,परंतु गौरा को पानी में मरा हुआ देखकर वह शी अपनी जान दे देता हैं ।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में यह बताया हैं कि मंगरू अपनी जान पर खेलकर स्त्री की रक्षा करता हैं । स्त्री की रक्षा करना सामाजिक मूल्य हैं। परंतु वही मंगरू अपनी पत्नी पर शक करता हैं । शक करना प्रेम का अवमूल्यन हैं । यही शक उसे और अपनी पत्नी की जान देने के लिये विवश करता हैं । अतः सुदृढ परिवार के लिये मन का शक निकाल देना चाहिए यही इस कहानी का सामाजिक मूल्य हैं ।

निष्कर्ष :– हिंदी कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंदजी की उपर्युक्त सामाजिक कहानियों का कथ्य देखने के बाद उसमें 'सामाजिक मूल्य' कई जगह पर मिल जाते है। जिसप्रकार मूल्य दिखाई देते हैं, उसी प्रकार कुछ कहानियों में अन्य पात्रों द्वारा मूल्यों का अवमूल्यन भी दिखाई देता है। 'ठाकुर का कुआँ' इस कहानी में ठाकुर द्वारा गंगी को अपने कुएँ का पानी न देना, ठाकूर के प्रति मन में आक्रोश पैदा करता हैं। यहाँ ठाकूर ने दलित जाति को पानी न देकर मूल्य का अवमूल्यन किया हैं तो दूसरी तरफ हमारे मन में दलितों के प्रति सहानुभूति निर्माण होती हैं, यह मूल्य हैं। इसी प्रकार 'दूध का दाम' कहानी में मंगल के प्रति करूणा और सहानूभूति जगाना मूल्य हैं। 'सद्गती' कहानी में पंडित के प्रति तिरस्कार सामाजिक मूल्य हैं। 'कफन' कहानी में घीसू और माधव की बुरी आदतों से बचने की सलाह लेखक यहाँ देता हैं। 'घासवाली' कहानी में मुलिया जैसी निम्न जाति की स्त्री के संस्कार और पतिव्रता रूप को भी सामाजिक मूल्य के अंतर्गत रखा जाता है। 'मृतक भोज' कहानी में सामाजिक कुरीतियाँ और धार्मिक आडम्बरों का विरोध 'स्वामिनी' कहानी की रामप्याारी का संघर्ष तथा 'शुद्रा' कहानी के मंगरू द्वारा स्त्री के सतित्व की रक्षा आदि सामाजिक मूल्य के अंतर्गत आता हैं।

कुल मिलकर प्रेमचंदजी ने अपनी इन सामाजिक कहानियों के द्वारा दलित तंथा उच्चवर्णियों की बुराईयों को दिखाकर सामाजिक विषमता तथा व्यवस्था का भयावह दश्य हमारे सामने रखा हैं। इन कहानियों के निम्न जाति के पात्रों की दशा देखकर उनके प्रति हमारे मन में 'सहानुभूति' तथा करूणा जगना ही सामाजिक मूल्य हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1) जीवन – मूल्य विमर्श (प्रथम संस्करण – 2008) – डॉ. हरिशकुमार सेठी।
2) मूल्य शिक्षण (तृतीय संस्करण – 2009) – डॉ. रामशकल पाण्डेय।
3) मानव मूल्य और साहित्य (चौथा संस्करण – 2006) – डॉ. धर्मवीर भारती।
4) मानसरोवर (भाग 1 से 8 तक) – प्रेमचंद।

प्रा. मारूती दत्तात्रय नायकू
शरदचंद्र पवार महाविदयालय, लोणंद , ता. खंडाला, जिला–सातारा.